संस्कृत साहित्य सौरभ

मालतीमाधव

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

१८

भवभूति-कृत

मालती-माधव

•

श्री विष्णु प्रभाकर
द्वारा
कथासार

•

विष्णु प्रभाकर
द्वारा
संपादित

•

सत्साहित्य - प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

●

पहली बार : १९५५
मूल्य
छः आना

●

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो, जिसके सम्बन्ध में मूल्यवान सामग्री का अनन्त भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिन्दी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें; परन्तु उसका रस वे हिन्दी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर बहुत समय पहले हमने विचार किया था कि संस्कृत के प्रमुख कवियों, नाटककारों आदि की विशिष्ट रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हिन्दी में प्रस्तुत करें और इस कार्य को संस्कृत-प्रेमी श्री हरदयालुसिंहजी से तभी प्रारम्भ भी करा दिया था। उन्होंने कई ग्रन्थों का कथासार हमारे लिए कर दिया था। हिन्दी के पाठकों की सेवा में उस तथा कुछ अन्य सामग्री को सम्पादित करके उपस्थित किया जा रहा है।

इस पुस्तक-माला से हिन्दी के सामान्य पाठक भी लाभ उठा सकें, इसलिए पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन हिन्दी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

इस माला में कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। आशा है, हिन्दी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान् रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रन्थ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

—मंत्री

भूमिका

संस्कृत के नाटककारों में यदि कोई कालिदास की बराबरी करता है तो वह भवभूति ही है। उन्होंने तीन रस को लेकर तीन नाटक लिखे। 'उत्तर-राम-चरित' में उन्होंने करुण-रस का, 'महावीर-चरित' में वीर रस का और 'मालती-माधव' में श्रृंगार रस का स्रोत बहाया है। कालिदास यदि 'प्रसाद' गुण के लिए प्रसिद्ध है तो भवभूति 'ध्वनि' के लिए। मधुर छन्द गूंथने में तो वह अद्वितीय है। उनकी कविता हर दृष्टि से ऊंची श्रेणी की है। और जैसा कि उन्होंने स्वयं उस नाटक की प्रस्तावना में लिखा है, 'नाटक लिखने से उन्हें नैसर्गिक प्रेम था।'

इस नाटक की कथा बिल्कुल काल्पनिक है पर तत्कालीन धर्मनीति समाजनीति और राजनीति पर अच्छा प्रकाश डालती है। यह प्रेम कहानी है परन्तु इसका प्रेम असंयत नहीं है, वरन् गम्भीर और प्रौढ़ है। उसमें पवित्रता है, गदलापन नहीं। राजा का आदर्श, प्रजा को उसकी आलोचना करने का अधिकार, स्त्रियों का तत्कालीन राजनीति में भाग लेना आदि-आदि बातों पर कवि ने बड़ी खूबी से प्रकाश डाला है। उसका प्रकृति वर्णन बड़ा मनोहर है।

भवभूति का जन्म दक्षिण में विदर्भ देश के पद्मपुर गांव में हुआ था। इनके दादा का नाम भट्टगोपाल, पिता का नीलकण्ठ, और माता का जातुकर्णी था। यह कश्यप गोत्रीय यजुर्वेद की तैत्तरीय शाखा के पण्डित थे। इनके नाटकों पर इनके पाण्डित्य की छाप है। लेकिन साथ ही इनमें विद्रोह का स्वर प्रमुख है। इन नाटकों का अभिनय राजसभा में न होकर उज्जयनी में, महाकाल की यात्रा के समय इकट्ठी हुई, जनता के सामने हुआ था। इन्हें राजाश्रय शायद नहीं मिला। इनके नाटकों की आलोचना से पता लगता है कि तत्कालीन विद्वानों में भी उनका आदर नहीं था। पर कुछ भी हो यह विश्व साहित्य के एक महान नाटककार हैं और रहेंगे। पंडितों का अनुमान है कि यह आठवीं शताब्दी के शुरू में हुए थे।

—सम्पादक

मालती-माधव

: १ :

विदर्भ-राज के मंत्री देवरात, पद्मावती-राज के मंत्री भूरिवसु और बौद्ध-संन्यासिनी कामन्दकी बचपन में देश-देश के अनेक विद्यार्थियों के साथ एक विद्यापीठ में एक संग पढ़ा करते थे। उनमें आपस में बड़ा प्यार था। भूरिवसु और देवरात में तो इतना प्यार था कि कामन्दकी और उनकी मुख्य शिष्या सौदामिनी के सामने उन दोनों ने यह प्रतिज्ञा की कि यदि उनमें से किसी एक के पुत्र तथा दूसरे के पुत्री होगी तो दोनों का आपस में विवाह कर दिया जायगा। समय आने पर देवरात के माधव नाम का एक पुत्र तथा भूरिवसु के मालती नाम की एक कन्या उत्पन्न हुई। परन्तु उनके पिताओं की प्रतिज्ञा के अनुसार उनका विवाह होता दिखाई नहीं दिया। कामन्दकी इस बात से बड़ी चिन्तित हुई। विशेषकर इसलिए कि पद्मावती के राजा का साला नन्दन मालती से विवाह करना चाहता था। महाराज भी यही चाहते थे और उनके कहने पर मंत्री भूरिवसु भी इस विवाह के लिए तैयार हो गये थे। ऊपर से इस प्रकार सबकुछ ठीक दिखाई देता था, परन्तु

अन्दर से भूरिवसु अपनी प्रतिज्ञा को भूले नहीं थे। वह चाहते थे कि मालती का विवाह माधव से ही हो। और यह काम उन्होंने बचपन की अपनी सखी बौद्ध-संन्यासिनी कामन्दकी को सौंप दिया था। वह मालती से बहुत प्रसन्न थी, क्योंकि वह बहुत ही योग्य, चतुर और सुन्दर थी। इसलिए सबकुछ भूलकर वह इसी काम के पीछे पड़ी हुई थी। उन दिनों कुण्डलपुर से माधव भी न्याय पढ़ने वहीं आये हुए थे। इस बात से लाभ उठाकर उन्होंने अपनी शिष्या अवलोकिता की सहायता से माधव और मालती में परस्पर प्रेम पैदा हो, एक ऐसी योजना बनाई।

इस योजना के अनुसार मदन-महोत्सव के अवसर पर मालती और माधव ने एक-दूसरे को देखा और दोनों एक-दूसरे की ओर खिंचे। माधव वीर और सुन्दर तो थे ही, हार गूंथने में भी बड़े कुशल थे। उद्यान में घूमते-घूमते जब वह थक गये तो उन्होंने मौलसिरी के उन फूलों की, जो डाल से टूट कर गिर गये थे, एक सुन्दर माला तैयार की। उसी माला को मालती की सखी लवंगिका उनसे मांग कर ले गई। बोली, "महा-भाग, धागा एकसा होने के कारण फूलों की गूंथन एकसी हुई है। इसलिए यह हार बहुत ही सुन्दर दिखाई देता

ह। हमारी राजकुमारी इसे अपने कंठ में पहनने के लिए बहुत ही उत्सुक हैं।"

लवंगिका ने जब इस प्रकार अनुरोध किया तो माधव ने वह हार अपने गले से निकाल कर उसे दे दिया। मालती ने वह हार मांग कर ही अपना प्रेम प्रकट नहीं किया, बल्कि उसने माधव का एक सुन्दर चित्र भी बनाया। उसी चित्र को लवंगिका ने बौद्ध-विहार की दासी मन्दारिका को दे दिया। बात यह थी कि माधव का सेवक कलहंस मन्दारिका से प्रेम करता था। उसने मन्दारिका के पास अपने स्वामी का चित्र देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसे लेकर माधव के पास पहुंचा। माधव तब उद्यान में बैठे अपने बाल-सखा मकरन्द को मालती से मिलने की कहानी सुना रहे थे। उस चित्र को देखकर उन्हें विश्वास हो गया कि मालती के मन में भी अनुराग पैदा हो गया है। इस पर मकरन्द ने माधव से कहा, "जिसके लिए तुम बेचैन हो रहे हो, उस मालती का चित्र भी तुम इस चित्रपट पर उतार दो।"

माधव ने ऐसा ही किया। इसी समय कलहंस को ढूंढती हुई मन्दारिका वहां आ पहुंची। उसे चित्र की तलाश थी। आते ही उसने कहा, "कलहंस, तुम बड़े चोर

हो, भला तुमसे किसने कहा था कि इसे यहां ले आना। हमारा चित्रपट हमें दे दो, नहीं तो अच्छा न होगा।"

पर जब उसने उस चित्रपट पर मालती का भी चित्र देखा तो वह भी बहुत प्रसन्न हुई और तुरन्त उसे लेकर लवंगिका के पास चली गई। दोपहर हो चला था। माधव भी मकरन्द के साथ घर की ओर चल पड़े। मन उनका बड़ा उदास था। कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। कोमल शरीर जैसे मुरझा गया हो। मकरन्द ने सबकुछ देखा और मन-ही-मन सोचा—ऐसे अवसर पर भगवती कामन्दकी के सिवा हमारी रक्षा और कौन कर सकता है।

वह केवल सोचकर ही नहीं रह गया, उसने इन सब बातों की पूरी सूचना भगवती कामन्दकी को पहुंचा दी और उन्होंने मालती का हाल जानने के लिए अवलोकिता को भेजा। मालती तब लवंगिका के साथ ऊपर अटारी पर बैठी हुई माधव की ही चर्चा कर रही थी। इसी समय लवंगिका ने मन्दारिका का लाया हुआ चित्रपट उसे दिखाया। उस पर अपना चित्र देखकर मालती बड़ी प्रसन्न हुई, परन्तु माधव के मिलने की उसे कोई आशा नहीं थी। इसलिए वह दुखी भी बहुत हुई। उसका जी घबराने लगा। माता-पिता की आज्ञा के बिना

किसी से प्रेम करके वह अपने कुल को कैसे कलंकित कर सकती थी। माधव से प्रेम करने का यही तो अर्थ होता था । नहीं, अपने कुल का अपमान करके वह माधव को पाने की आशा नहीं करेगी ...।

वह इसी प्रकार सोच-विचार में मग्न थी कि कामन्दकी और अवलोकिता ने वहाँ प्रवेश किया। भगवती को सब बातों की सूचना मिल चुकी थी । वह बड़ी प्रसन्न थीं। विवाह में मुख्य बात वर-वधू का आपस का प्रेम ही तो होता है । अंगिरा ऋषि ने भी कहा है कि जिस पर मन और नेत्रों का अनुराग हो, उसीके साथ विवाह करने में विशेष उन्नति होती है। लेकिन इन सब बातों को उन्होंने मन ही में रखा। ऊपर से वह बड़ी दुखी दिखाई दी और मालती के बारे में चिन्ता प्रकट करने लगी। यह बात सब जगह फैल चुकी थी कि महाराज के अनुरोध पर मंत्री भूरिवसु ने मालती का विवाह नन्दन से करने का निश्चय कर लिया है। कामन्दकी बोली, "न जाने क्या सोचकर भूरिवसु ने ऐसा गुणहीन वर चुना है। शायद वह राजा को प्रसन्न करना चाहते हैं।" लवंगिका ने कहा, "यदि ऐसा न होता तो बूढ़े और गन्दे नन्दन को अपनी बेटी देने को वह क्यों राजी हो जाते!"

मालती को इन बातों से और भी दुख पहुंचा। वह पुकार उठी––हाय, उसका भाग्य ही फूट गया है। उसके पिता ने महाराज को सन्तुष्ट करना ही उचित समझा, उसकी कोई चिन्ता नहीं की। यह देखकर सखी के दुख से दुखी लवंगिका ने भगवती से सहायता की प्रार्थना की, पर वह बोलीं, "मैं यहां क्या कर सकती हूं। अपनी पुत्री पर पिता का पूर्ण अधिकार है। हां, वधू और वर अपने आप कुछ करें तो मनचाही बात हो सकती है। पुराने ज़माने में ऐसी अनेक घटनाएं हुई हैं। अपनी इच्छा से ही विश्वामित्र की बेटी शकुन्तला ने दुष्यन्त से, देवलोक की अप्सरा उर्वशी ने पुरुरवा से और उज्जयिनी के राजा चंडमहासेन की बेटी वासवदत्ता ने कौशाम्बी के राजा उदयन से विवाह किया था, पर ऐसा करने के लिए साहस चाहिए।"

ये बातें हो ही रही थीं कि अवलोकिता बोल उठी, "भगवती, देर हो गई। माधव की तबियत बहुत खराब है। उनका समाचार लेना चाहिए।"

माधव का नाम सुनकर मालती और लवंगिका उनका परिचय जानने को उत्सुक हो उठीं। लवंगिका बोली, "माता, आप बार-बार 'माधव-माधव' कहा करती हैं। वह कौन हैं? मालूम होता है कि आप

उन्हें बहुत प्यार करती हैं।" भगवती कामन्दकी ने माधव और उनके पिता का परिचय देते हुए कहा, "मालती के पिता भूरिवसु माधव के पिता देवरात को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। आजकल अपने बचपन के साथी मकरन्द के साथ जो न्यायशास्त्र पढ़ते हैं, वही माधव देवरात के पुत्र हैं।" यह परिचय पाकर मालती बड़ी प्रसन्न हुई, लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी आंखों में आंसू उमड़ आये—क्या वह फिर उन्हें देख सकेगी ?

: २ :

इधर मालती दुखी थी, उधर माधव के मन में टीसें उठा करती थीं, पर भगवती कामन्दकी चुपचाप अपने काम में लगी हुई थी। उस दिन कृष्ण चतुर्दशी थी। शास्त्र में लिखा है कि इस दिन अपने हाथों से फूल चुनकर शंकर की पूजा की जाय तो सौभाग्य अटल रहता है। इसीलिए भगवती कामन्दकी की आज्ञानुसार मालती की माता ने उसे और लवंगिका को शिवालय के पास की वाटिका में भेजा। माधव पहले से ही वहां बैठे थे। इस योजना के साथ-साथ एक और योजना वहां चल रही थी। भगवती का विचार था कि माधव के बालसखा मकरन्द का विवाह

नन्दन की बहन मदयन्तिका से हो जाय तो बहुत अच्छा होगा। इस काम के लिए उन्होंने मदयन्तिका की सखी बुद्धरक्षिता को नियत किया था। इसलिए उस दिन मदयन्तिका भी दर्शनों के लिए शिवालय जा रही थी।

मालती बड़ी उदास थी। उसे बार-बार माधव की याद आती थी। लवंगिका प्रकृति, पुष्प और पक्षियों का वर्णन करके उसका मन बहलाने लगी। भगवती कामन्दकी भी साथ थी और माधव भी पास ही था। वह उन सबको देख सुन सकता था। जब मालती फूल चुनते-चुनते थक गई तो भगवती के कहने पर वे सब बैठ गईं और भगवती उन्हें माधव की कथा सुनाने लगी कि वह मालती से प्रेम करने लगा है। उसकी दशा बराबर गिरती जा रही है। वह अपने प्राण हथेली पर लिये फिरता है। न जाने कब कैसा साहस कर बैठे इत्यादि, इत्यादि....।

ये बातें सुनकर माधव बड़ा प्रसन्न हुआ, परन्तु मालती बहुत भयभीत और व्याकुल हो उठी। इसके उत्तर में लवंगिका ने कहा, "मालती की दशा भी ऐसी ही है। किसी कला में उसका जी नहीं लगता। दिन भर गाल पर हाथ धरे बैठी रहती है। जबसे माधव को देखा है, शरीर की जलन बढ़ती ही जाती है। हम लोग

सबकुछ करती हैं। चांदनी में टंगा चन्द्रहार इसे पहनाती हैं, शरीर पर कदलीफल से चन्दन का लेप करती हैं, पर यह तड़पती रहती है। रो-रोकर कहती है, "विधाता, मैं तो मरना चाहती थी। जी के क्या करूं ?" इसका दुःख कैसे दूर हो ? कुछ नहीं सूझता। आप ही कुछ उपाय करिये।"

मालती की ऐसी दशा है, यह जानकर भगवती कामन्दकी भी बड़ी दुखी हुई; लेकिन वह कुछ उपाय सुझाती कि इतने में पास ही कहीं कोलाहल मचने लगा। उन्होंने सुना, कोई पुकार रहा था, "भागो, भागो, एक भयानक शेर एकाएक लोहे के कटघरे से निकल भागा है। कटार के समान दांतों से हड्डियां कटकटाता हुआ, गुफा जैसा मुंह बाये वह इधर-उधर दौड़ रहा है। एक ही चपेट में मनुष्य, बैल और घोड़ों को मार कर और उनका रक्त-मांस गले में भर कर, वह अपने घोर गर्जन-तर्जन से आकाश को कंपा रहा है . . . भागो, भागो, अपने प्राण बचाओ।"

इसी समय बुद्धरक्षिता भी दौड़ती हुई वहां आई। वह बुरी तरह घबरा रही थी और कह रही थी, "बचाओ, बचाओ। नन्दन की बहन मदयन्तिका शेर के पंजे में फंस गई है। जो उसे बचाने गये उन्हें भी शेर

ने मार डाला। अब शीघ्र कोई आओ और उस बेचारी को बचाओ।"

यह समाचार पाकर मालती घबरा उठी, लेकिन माधव एकदम कुंज से बाहर निकल आए और मदयन्तिका की रक्षा करने के लिए बुद्धरक्षिता के साथ चले गए। उन्हें देखकर पहले तो मालती बड़ी प्रसन्न हुई, फिर उसका मन शंका से भर उठा कि कहीं उन्हें कुछ हो न जाय। लेकिन इधर माधव शेर तक पहुंच पाते इससे पूर्व ही मकरन्द ने किसी गिरे हुए मनुष्य का धनुष उठा लिया और वह उस भयानक शेर की ओर लपका। शेर भी उस पर झपटा, लेकिन मकरन्द ने तुरन्त उसे मार डाला। यह देखकर सब लोग 'धन्य, धन्य' कर उठे। पर इस युद्धमें उसके भी कम चोट नहीं लगी थी। कुछ क्षण तो वह तलवार के सहारे खड़ा रहा, फिर बेहोश होकर गिर पड़ा। मदयन्तिका ने उसे गिरते देखा तो घबरा उठी और उसे होश में लाने का प्रयत्न करने लगी। माधव और कामन्दकी आदि भी उसीकी ओर लपके, पर वहां पहुंचते-पहुंचते माधव स्वयं बेहोश हो गये। अब तो सब-की-सब उनके उपचार में लग गईं। कामन्दकी ने अपने कमण्डल से दोनों पर जल छिड़का। शेष सब अपने आंचल से हवा

करने लगीं। काफी देर बाद जब उन्हें होश आया तो चारों ओर हर्ष की लहर दौड़ गई। सबने एक दूसरे को पहचाना और प्रेम भरी दृष्टि से देखा। बुद्धरक्षिता ने भी उचित अवसर जान कर मदयन्तिका को बताया कि वह उससे जिनकी चर्चा करती रही है वह मकरन्द यही हैं। माधव भी एक प्रकार से मालती से वचनबद्ध हो गये, लेकिन इसी समय एक पुरुष वहां आया। उसने मदयन्तिका से कहा, "बेटी, तेरे बड़े भाई नन्दन ने सन्देश भेजा है कि आज महाराज हमारे घर पधारे थे। उन्होंने मेरा विवाह मालती के साथ करने का निश्चय किया है। उसीके सम्बन्ध में आज आनन्द उत्सव मनाने का विचार है। इसलिए तुम चलकर राजमन्दिर को सजाने का प्रबन्ध करो।"

मदयन्तिका यह सुन कह बड़ी प्रसन्न हुई, लेकिन मालती और माधव दोनों उदास हो उठे। दुःख तो औरों को भी हुआ, पर ऊपर से उन्होंने मदयन्तिका को बधाई दी और वह बुद्धरक्षिता के साथ, मकरन्द की ओर देखती हुई, अपने महल में चली गई। उसके जाने के बाद माधव और भी दुखी हो उठे। मालती से विवाह होने की आशा जाती रही। कार्य के आरम्भ में ही विधाता उल्टे पड़ गये। मालती का दुख अब

वह कैसे सहेंगे ?... उसकी यह दशा देखकर भगवती कामन्दकी ने उन्हें समझाया कि उन्हें अभी आशा नहीं छोड़नी चाहिए। अमात्य भूरिवसु ने महाराज से जो कुछ कहा है उसके विषय में भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने मकरन्द से कहा, "मैं भी इस ओर से असावधान नहीं हूं। कुछ भी क्यों न हो, मेरी जान पर ही क्यों न आ बने, मैं यही प्रयत्न करती रहूंगी कि मालती का विवाह माधव के साथ हो।"

इस प्रकार भगवती कामंदकी उन सबको समझा रही थी कि उन्हें महारानी का सन्देश मिला, "मालती को लेकर अभी आओ।" वह तुरन्त जाने के लिए उठी। तब मालती की मूक वेदना और भी तीव्र हो आई। वह सोचने लगी--अब जी के क्या करूं। पिता की निर्दयता तो सीमा को पार कर गई है। विधाता ने जो चाहा वही हुआ। अब मैं क्या करूं? कहां जाऊं? किसे दोष दूं?

उसके जाने के बाद माधव ने निराश होकर मन-ही-मन श्मशान में महामांस बेचने का निश्चय किया और फिर मकरन्द को साथ लेकर वह स्नान करने के लिए पारा और सिन्धु के संगम पर चले गये।

: ३ :

जिस समय माधव हाथ में तलवार लेकर श्मशान में महामांस बेचने पहुँचे तो सन्ध्या बीत चुकी थी। उसी समय भयानक रूप धरे कपालकुण्डला भी वहां आई। पहले तो उसने कौतुक से माधव को देखा, फिर उधर से ध्यान हटा लिया। पास ही कराला देवी का मठ था। वहां उसका गुरू अघोरघन्ट मंत्रसिद्धि को पूर्ण करने के लिए विशेष रूप से, देवी की पूजा करने जा रहा था। वह उसी के लिए सामान इकट्ठा कर रही थी। मंत्र-साधना से पहले बलि चढ़ाने के लिए एक कन्या की आवश्यकता थी। उसीको लाने के लिए वह शहर चली गई। माधव मालती को याद करते हुए वहीं घूमते रहे। इधर-उधर घूमते-फिरते पिशाचों की भीड़ के कारण श्मशान की भयंकरता और भी बढ़ गई थी। कुछ नाच रहे थे। कुछ वैसे ही शोर मचा रहे थे। माधव उन्हें पुकार-पुकार कर कहने लगे, "अरे भूत-पिशाचो, डाकनियो आओ, आओ, में महामांस बेच रहा हूं। यह पूजा के योग्य पुरुष का मांस है। बिना शस्त्र के काटा गया है। आओ, इसे लो।"

इस पर कोलाहल और भी बढ़ गया। उनके वीभत्स कामों से श्मशान की भयंकरता और भी

भयानक हो उठी। उनकी वेषभूषा और उनकी बातचीत करने की रीति ऐसी डरावनी थी कि दिल दहल उठता था, फिर भी माधव की पुकार सुनकर वे सब डर गए और शीघ्र ही वहां से भाग गये। माधव भी घूमते-घूमते श्मशान के दूसरे किनारे पर पहुंच गये। तभी एकाएक उन्होंने सुना, कोई करुण स्वर में पुकार रहा था, "हाय, निर्दय पिता, जिसे भेंट देकर आप महाराज को प्रसन्न करने वाले थे वह तुम्हारी बेटी अब मुसीबत में फंस गई है।"

माधव को लगा, जैसे यह स्वर जाना पहचाना है। उसे सुनकर उनका दिल फटने लगा। वह कांप उठे—यही सामने तो कराला देवी का मन्दिर है। हो न हो, यहीं से यह स्वर आ रहा है। देखना चाहिए।

वह तेजी से उधर ही चल पड़े। वहां अघोरघंट और कपालकुंडला दोनों देवी के ध्यान में मग्न बैठे थे। मालती बलिदान के सारे चिन्ह धारण किये एक कोने में खड़ी थी और पुकार रही थी, "हाय मां, मालती तुमको प्राणों से अधिक प्यारी थी, पर अब क्या होगा। भगवती कामन्दकी, आपको संसारी दुखों से क्या मतलब था; पर आप मुझे कितना प्यार करती रहीं। वही प्यार अब आपको सतायेगा। हाय प्यारी

सखी लवंगिका, अब इस जन्म में तुमसे मिलना नहीं हो सकता ।"

तभी माधव वहां पहुंच गये। उन्होंने देखा—कपालकुंडला और अघोरघंट देवी की आरती उतार चुके हैं। अघोरघंट अपनी अभिमंत्रित तलवार मालती के गले पर रख रहा है और कपालकुंडला उससे कह रही है, "तेरा काल आ पहुंचा है। जो कोई तेरा प्रिय हो, उसे याद करले ।"

मालती माधव का स्मरण करने लगी और अघोरघंट ने तलवार उठाई कि तभी एकाएक खड्ग खींचकर माधव उनके बीच में जा कूदे। उन्होंने ललकारा, "रे दुष्ट, पीछे हट, खबरदार जो आगे पैर रखा! यदि ऐसा किया तो जीता नहीं रहेगा ।"

माधव को देखकर मालती पुकार उठी, "महाराज, मुझे बचाओ, मुझे इन दोनों से बचाओ ।"

माधव ने मालती को ढाढ़स बंधाया और स्वयं कापालिक से जा भिड़े। दोनों में भयंकर युद्ध छिड़ गया। कपालकुंडला अघोरघंट को उत्साहित करती थी और मालती माधव को। वे दोनों भी उन दोनों को अपनी-अपनी जय का विश्वास दिलाते थे और दूने उत्साह से एक-दूसरे पर आक्रमण करते थे।

इधर यह युद्ध चल रहा था उधर मालती को खोजने वालों नें देवी के मन्दिर को घेर लिया। भगवती कामन्दकी ने अमात्य भूरिवसु को बता दिया था कि मालती जैसी सुन्दरी कन्या को अघोरघंट के सिवा और कोई नहीं ले जा सकता। वह अवश्य उसे कराला देवी की भेट चढ़ायेगा। कपालकुंडला ने यह देखकर तुरन्त अघोरघंट को सूचना दी। वह दुष्ट तनिक भी नहीं घबराया। माधव को तो डर ही क्या था। उन्होंने मालती को आये हुए आदमियों को सौंप दिया और खुले युद्ध में सबके सामने ही अघोरघंट को मार डाला। यह देखकर कपालकुण्डला क्रोध से पागल हो उठी और उसने माधव को ललकारा, लेकिन माधव ने स्त्रीवध का पाप लेनें से इन्कार कर दिया। इस पर वह बदला लेने को और भी आतुर हो उठी।

ऐसा करने का अवसर भी उसे तुरन्त मिल गया। विवाह मंडप में जाने से पहले मालती कामंदकी की आज्ञा से नगर देवी का दर्शन करने गई। माधव तब मकरंद के साथ वहीं छिपे बैठे थे। उनके सेवक कलहंस ने उन्हें मालती के आने की सूचना दी। वह बड़े ठाठ-बाट से आ रही थी। मंगल बाजे बज रहे थे। पैरों में पैंजनी पहने हथनियों पर चढ़ी हुई, सजी-धजी गणिकायें

मधुर-मंगल-गान कर रही थीं। चीन देश के रंग-बिरंगे वस्त्रों को देखकर ऐसा लगता था, मानो ढेर सारे इन्द्रधनुष उग आये हों; लेकिन इस सारे ऐश्वर्य के बीच कोमल वदन वाली मालती वेदना के कारण एकदम दुबली हो गई थी। रंग उसका पीला पड़ गया था, मानों ऊपर के फूलों से लदी किसी लता को भीतर से कीड़े ने खा लिया हो।

हथिनी से उतर कर वह भगवती कामन्दकी और लवंगिका के साथ मन्दिर की ओर चली। तभी महाराज के भेजे आभूषण लिये प्रतिहारी वहां आई। भगवती कामन्दकी ने मालती और लवंगिका को मंदिर में भेज दिया और आप गहनों को परखने के बहाने बाहर ही ठहर गई। अन्दर मालती की बुरी दशा थी। उसका हृदय स्थिर नहीं था। वह लवंगिका से बहकी-बहकी बातें कर रही थी। माधव और मकरंद भी सब कुछ देख-सुन रहे थे। वे भी उसके दुःख से बड़े दुखी हुए और जब मालती आत्महत्या की आज्ञा मांगने के लिए लवंगिका के चरणों पर गिर पड़ी तब तो प्रेम की हद हो गई। इसी समय लवंगिका के संकेत पर माधव उसके स्थान पर खड़े हुए। मालती बारबार प्रार्थना करने लगी, "सखि, मेरी बात मान ले, देर न कर।

तू मेरी बात पर ध्यान क्यों नहीं देती ?"

उसके बार-बार ऐसा कहने पर माधव ने कहा, "जैसा तेरा मन हो, वैसा कर।"

मालती उस स्वर को न पहचान सकी। वह प्रसन्न होकर उठी और वह माला, जो उसने एक दिन माधव से मंगवाई थी, लवंगिका के गले में पहनाने चली; पर जैसे ही दृष्टि उठाई, उसने माधव को पहचान लिया। एकदम कांपकर पीछे हट गई। बदन से पसीना छूटने लगा। मुंह से निकला, "अरे, लवंगिका ने मुझे बड़ा धोखा दिया।"

तभी कलहंस और भगवती कामन्दकी आदि सब लोग वहां आ गये और बड़े स्नेह से आंखों में आंसू भर कर भगवती ने माधव से कहा, "पुत्र,सारे मांडलिक राजा जिसके चरणों में मस्तक झुका कर धन्य होते हैं उसी प्रधानमंत्री भूरिवसु की यह इकलौती पुत्री मालती मैं तुम्हें सौंपती हूं।"

फिर मकरन्द से बोली, "लो, यह आभूषण पहन कर तुम मालती बन जाओ और पूर्व योजना के अनुसार मेरे साथ चल कर नन्दन से विवाह करा लो।"

जब मकरन्द मालती का वेश धारण करके आ गया तो जाने से पूर्व मालती-माधव से कहा, "इस मठ

के पिछवाड़े एक बगीचा है। गुप्त द्वार से निकल कर तुम उसीमें चले जाओ। अवलोकिता व्याह का सब सामान लिये बैठी है। वहीं तुम्हारा व्याह होगा और जबतक मदयन्तिका और मकरन्द न आ जायं, तबतक वहीं ठहरना।"

: ४ :

मालती वेशधारी मकरन्द की शादी नन्दन से ठीक-ठीक हो गई। किसी को कुछ पता नहीं लगा, परन्तु मकरन्द ने उसे पास नहीं आने दिया। जब उसने बल-प्रयोग करना चाहा तो एक ऐसी लात जमाई कि वर महाशय रो पड़े। फिर गालियां देते हुए वहां से भाग गये। मदयन्तिका को जब इस बात का पता लगा तो उसे बड़ा दुख हुआ और मालती को समझाने के लिए वह उसके पास आई। वह मालती को ही अपराधी समझती थी, पर लवंगिका और बुद्धरक्षिता ने उसे ऐसी पट्टी पढ़ाई कि वह अपने भाई को दोषी मानने लगी। फिर भी उसने कहा, "मेरे भाई ने जो कड़ी बात कही, वह भी बेसिर-पैर की नहीं है। सारे शहर में मालती-माधव के प्रेम की चर्चा हो रही है।"

इस पर बात आगे बढ़ी और उस चर्चा में मकरन्द का नाम भी आ गया। मदयन्तिका धीरे-धीरे

सब कुछ भूलकर मकरन्द की याद में आत्म-विभोर हो उठी और मन की सब बातें कह बैठी । उसने यहां तक कह दिया, "जबसे उस वीर ने अपने प्राण संकट में डालकर मुझे शेर के पंजे से छुड़ाया है, तबसे मैं उनकी हो चुकी हूं ।"

इसी समय बाहर नौबत बजने लगी । मदयन्तिका घबरा उठी, "अरे, क्या आधी रात हो गई । मैं अब जाती हूं और भैया को समझाती हूं कि वह मालती को मना ले ।"

लेकिन जैसे ही वह उठी, मकरन्द ने अपने आपको प्रकट कर दिया । एक बार तो मदयन्तिका घबरा गई, फिर उसे बड़ी खुशी हुई और वह उसके साथ खिड़की के रास्ते वहीं चली गई, जहां मालती और माधव थे ।

उधर मालती-माधव, अवलोकिता के साथ उन्हीं की चर्चा कर रहे थे । इसी समय उन्होंने किसी के आने की आवाज सुनी । शीघ्र ही बुद्धरक्षिता, लवंगिका, मदयन्तिका और कलहंस ने घबराये हुए वहां प्रवेश किया । उन्होंने माधव से कहा, "महाराज, अपने मित्र की रक्षा करो । यहां से कुछ दूर पर वह पहरेदारों के साथ अकेले युद्ध कर रहे हैं । जल्दी जाकर उनकी सहायता करो ।"

कलहंस बोला, "पहरेदार यदि थोड़े होते तो चिन्ता करने की कोई बात नहीं थी, परन्तु हमारे इधर आते ही उन लोगों का बड़ा शोर सुन पड़ा। ऐसा लगता है कि उन लोगों की सहायता के लिए और बहुत से लोग आ गये हैं।"

माधव ने शान्ति से उनकी बातें सुनी। उन्होंने मदयन्तिका का स्वागत किया और कहा, "यहाँ अच्छी तरह बैठो। मकरन्द अकेले हैं, इस बात से तुम तनिक भी न घबराओ। उनके सामने कितने ही पुरुष क्यों न आवें, वे उनका बाल बांका भी नहीं कर सकते। फिर भी मेरे जाने में कुछ देर नहीं है।"

यह कहकर वह कलहंस के साथ चले गये। उनके जाने के बाद मालती ने बुद्धरक्षिता और अवलोकिता को कामन्दकी के पास भेज दिया। फिर लवंगिका को माधव के पास जाने को कहा, "बहन लवंगिका, आर्यपुत्र से मेरी ओर से हाथ जोड़ कर प्रार्थना करना कि वह जो मुझ पर दया करते हैं, तो बहुत समझ-बूझ कर युद्ध करें।"

उन सबके जाने के बाद भी उसकी चिन्ता कम नहीं हुई। मदयन्तिका को छोड़कर वह बाहर जाकर लवंगिका की राह देखने लगी। वह कुछ ही दूर गई होगी कि एकाएक कपालकुण्डला ने उसे ललकारा।

वह घबरा कर चिल्ला उठी, पर वहां उसकी पुकार सुनने वाला कौन था ? कपालकुंडला बोली, "अब बता मेरे गुरु को मारने वाला वह तेरा माधव कहां है ? आज मैं तुझे खूब मजा चखाऊंगी । चल तो जरा फिर देखना, तुझे कैसा तिल-तिल काट कर हलाल करती हूं ।"

इस तरह धमकाती हुई कपालकुंडला मालती को लेकर चली गई । तभी मदयन्तिका उसे पुकारती हुई वहां आई । लेकिन मालती अब वहां कहां थी ! लौटती हुई लवंगिका ही उसे मिली । उसने बताया कि महाराज को सब बातों का पता लग गया है । वह बड़े क्रुद्ध हो रहे हैं । उन्होंने स्वयं सैनिकों को भेजा है और आप महल से उनका युद्ध देख रहे हैं । उधर नगर के लोग माधव और मकरन्द का नाम ले-लेकर रो रहे हैं ।

यह सुनकर मदयन्तिका बड़ी दुखी हुई और फिर वे दोनों इधर-उधर मालती को ढूंढने लगीं । उधर माधव और मकरन्द ने महाराज के सैनिकों को ज़रा-सी देर में मार भगाया । महाराज उनका युद्ध कौशल देखकर बड़े प्रसन्न हुए । जब वे दोनों उनके पास गये तो वे बड़े प्यार से उन्हें देखने लगे और जब उन्हें उनका परिचय मिला तब तो उन्होंने दोनों का बड़ा आदर किया । मंत्री से बोले, "कहिये, ऐसे सुन्दर और गुणवान मह-

मानों को पाकर आपकी इच्छा पूरी हुई या नहीं ।"

इस प्रकार आदर पाकर महाराज की सज्जनता को सराहते हुए वे दोनों वहां लौटे जहां मालती आदि को छोड़ गये थे। लेकिन वहां कोई भी नहीं था। उन्होंने सोचा कि शायद वे इधर-उधर चली गई हैं। इसलिए वे उन्हें खोजते हुए आगे बढ़े। तभी मदयन्तिका और लवंगिका भी उधर आ गईं, लेकिन मालती का किसी को कहीं पता नहीं लगा। मकरन्द को छोड़कर वे सब घबराने लगे। मकरन्द ने कहा, "बिना जाने पूछे इस तरह नहीं घबराना चाहिए। हो सकता है, वह भगवती कामन्दकी के पास चली गई हो ।"

वे उधर ही चल पड़े।

: ५ :

भगवती कामन्दकी की एक और शिष्या थी सौदामिनी। वह उनकी सखी के समान थी और श्री पर्वत पर रहती थी। जब वह पद्मावती आई तो माधव घर-बार छोड़कर मकरन्द के साथ मालती को खोजते हुए पहाड़ों की घाटियों, कन्दराओं और गहन वनों में मारे-मारे फिर रहे थे। उन्हीं को समझाने के लिए वह उन्हें इधर-उधर खोजने लगी। उसी वन के दूसरे भाग में माधव ठण्डी सांसें भरते हुए घूम रहे थे। मकरन्द

उनका मन बहलाने के लिए कभी सुन्दर हंसों की ओर उनका ध्यान खींचता था, कभी कुंज, लता, नदी और वनश्री की शोभा वर्णन करता था, पर माधव का दुख बढ़ता ही जाता था, यहां तक कि वह रोते-रोते बेसुध हो गये। अब तो मकरन्द का हृदय भी फटने लगा। वह उनकी देह पर हाथ फेर-फेर कर रोने लगा। परन्तु वर्षा आ जाने के कारण माधव की मूर्छा दूर हो गई और वह फिर मालती को सन्देशा भेजने के लिए बिजली और बादलों के पीछे पागलों की तरह दौड़ने लगे। फिर पर्वत और वन के जीव-जन्तुओं से पूछने लगे कि क्या उन्होंने कहीं मालती को देखा है। लेकिन किसी ने उनकी बात नहीं सुनी। तब उन्हें होश आया—मैं भी कैसा पागल हूं, जो इस वनचर से इस प्रकार बातें करने लगा जिस प्रकार मुझे मकरन्द से करनी चाहिए थी। कहां यह पशु, कहां वह सहृदय !

बस वह मकरन्द की ऐसी याद करने लगे जैसे वह कहीं दूर हो, पर वह तो पास ही था। सामने आकर बोला, "भाई, तुम्हारे जन्म का साथी अभागा मकरन्द तो आपके पास ही है।

उसे गले लगाकर माधव फिर मूर्छित हो गये। मकरन्द ने उन्हें होश में लाने के बड़े प्रयत्न किये, पर

जब वह नहीं जागे तो रोता-कलपता वह भी पाटलावती नदी में कूद कर मरने को तैयार हो गया। तभी सौदामिनी ने उसे पकड़ लिया और वकुलमाला दिखा कर विश्वास दिलाया कि मालती जीवित है। वहां से वह शीघ्र माधव के पास लौटे। उनकी मूर्छा टूट चुकी थी और उसके लिए वह हाथ जोड़ कर वायु को धन्यवाद दे रहे थे। तभी सौदामिनी ने उनकी अंजलि में वकुलमाला डाल दी। उसे देख कर वह अचरज, हर्ष और उन्माद से कांप उठे और उन्होंने समझा कि मालती कहीं पास ही है। वह उसको ढूंढने लगे। जब वह वहां नहीं मिली तो उन्हें फिर मूर्छा आने लगी, पर तभी सौदामिनी ने आगे बढ़कर उन्हें मालती के जीवित होने का समाचार सुनाया। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे माधव के अघोरघंट का वध करने के बाद . . .

अघोरघण्ट का नाम सुनते ही माधव सबकुछ समझ गये कि कपालकुण्डला ने मालती को चुरा कर उनसे बदला लेने का अपना प्रण पूरा किया है। उन्हें बड़ा दुख हुआ, पर सौदामिनी ने कहा, "मैंने उसका सब काम बिगाड़ दिया है। तुम दुखी मत होओ।" और वह माधव को लेकर आकाश मार्ग से वहां से चली गई।

सौदामिनी ने अपना परिचय नहीं दिया था, इस-

लिए मकरन्द को अभी पूरी तरह विश्वास नहीं आया। वह सब समाचार सुनाने के लिए भगवती कामन्दकी को ढूंढने चला गया। वह भी लवंगिका और मदयन्तिका के साथ मालती की याद में रोती-कलपती वन में घूम रही थी। वे इतनी विकल थीं कि तीनों मरने को तैयार हो गईं। इसके लिए वे मधुमती में कूदने चलीं, पर तभी उन्होंने मकरन्द का स्वर सुना और यह भी सुना कि मालती का मरना सुन कर भूरिवसु भी चिता में जलकर मरने को तैयार हैं। यही नहीं, दो क्षण बाद उन्होंने स्वयं मालती का स्वर भी सुना। वह पिता को पुकार रही थी। उस स्वर को सुनकर सब चौंक उठे और दूसरे ही क्षण उन्होंने हर्ष से विभोर होकर देखा कि मूर्छित मालती को संभाले हुए माधव आ रहे हैं। पिता की याद में मालती की बुरी दशा हो रही थी। दोनों एक-दूसरे के स्नेह के कारण, प्राण देने पर तुले हुए थे। उसकी यह दशा देखकर वे सब मूर्छित हो गये, लेकिन शीघ्र ही जाग उठे। मालती की मूर्छा भी खुल गई। तभी ऊपर से सौदामिनी का स्वर सुनाई दिया कि मेरे कहने पर अमात्य भूरिवसु ने आग में जलने का विचार छोड़ दिया है।

ये बातें सुनकर सब प्रसन्न हो उठे। सब एक-

दूसरे से ललक कर मिले। माधव ने सबको मालती के खो जाने की सच्ची घटना सुनाई और तभी सौदामिनी ने आकर भगवती कामन्दकी को प्रणाम किया, "भगवती कामन्दकी, चिरकाल की सखी और शिष्या सौदामिनी आपके चरण-कमलों में विनीतभाव से प्रणाम करती है।"

कामन्दकी ने उन्हें छाती से चिपका कर उनकी बड़ी प्रशंसा की। मालती बोली, "ये धन्य हैं। इन्होंने मां कामन्दकी का पक्ष लेकर कपालकुण्डला की खूब दुर्दशा की। मुझे अपने आश्रम में ले गई। बेटी की तरह मुझे ढाढस बंधाया। फिर मुझसे मौलसिरी की माला लेकर उसके सहारे तुम सबको मरने से बचाया. . ।"

सौदामिनी मन-ही-मन इस प्रशंसा से बड़ी लजाई, पर प्रकट में उन्होंने कहा, "भगवती, पद्मावती के महाराज ने मंत्री भूरिवसु के सामने नन्दन की राय से यह पत्र माधव के लिए स्वयं लिख कर भेजा है।"

देवी कामन्दकी ने उस पत्र को पढ़ा। उसमें महाराज ने मकरन्द और मदयन्तिका तथा माधव और मालती के विवाह की स्वीकृति दी थी और उनका स्वागत किया था।

अब तो सबके मन कमल खिल उठे। सब शंकाएं दूर हो गईं। सबके मनोरथ पूरे हुए। सौदामिनी

बोली, "इसमें सबसे अच्छी बात तो यह हुई कि अमात्य भूरिवसु और देवरात ने अपने बच्चों के विवाह की जो प्रतिज्ञा की थी, वह पूरी हुई।"

जब सब लोगों को इस रहस्य का पता लगा तो वे बड़े चकित और प्रसन्न हुए। भगवती कामन्दकी बोली, "वत्स माधव, सबकुछ ठीक हो गया। बोलो, अब और क्या चाहते हो?"

माधव ने उत्तर दिया, "इससे बढ़कर और क्या हो सकता है, तो भी आपके प्रसाद से सन्त प्रसन्न हों, पापियों का अन्त हो। राजा लोग धार्मिक, न्यायकारी, उपकार करने वाले और दुख-दरिद्रता को दूर करके जीवन देने वाले हों। वर्षा समय पर हो, जिससे खूब अनाज पैदा हो। बुरे चरित्र सुधर जायें, पवित्र भावों का उदय हो। सब कहीं सुराज हो और प्रजा सुखी हो।"

●

'संस्कृत साहित्य-सौरभ'

की

पुस्तकें

१. कादम्बरी
२. उत्तररामचरित
३. वेणी-संहार
४. शकुन्तला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानन्द
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्ष-चरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार-चरित : भाग १
१५. दशकुमार-चरित : भाग २
१६. विक्रमोर्वशी
१७. मेघदूत
१८. मालतीमाधव

मूल्य प्रत्येक का छः आना

१८

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना